International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 277-281

द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षुता कार्यक्रम : सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों के प्रत्यक्षीकरण

[1] दिब्या राय, [2] प्रो० कविता मित्तल

[1] शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत।

[2] प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

यावसायिक शिक्षा एक ऐसा कार्यक्रम है जिसके द्वारा व्यक्ति को एक विशिष्ट व्यवसाय के लिए तैयार किया जाता है। व्यावसायिक शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा मनोगत्यात्मक पक्षों का विकास किया जाता है तथा विशिष्ट व्यवसाय से संबंधित विशिष्ट ज्ञान व कौशल प्रदान किये जाते हैं। व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों की प्रकृति, उद्देश्य, विषयवस्तु, संरचना, समयावधि व कार्यप्रणाली अन्य अकादमिक शिक्षा कार्यक्रमों से भिन्न एवं विशिष्ट होती है। अतः प्रत्येक व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थियों को नवीन ज्ञानयुक्त एवं व्यावसायिक दक्षताओं के उच्चतम स्तर पर पहुँचाने के लिए सदैव ही प्रयासरत रहते हैं। व्यवसाय विशिष्ट योग्यताओं व विशेषताओं को विद्यार्थियों में विकसित करने में विश्वविद्यालयों एवं व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने वाले संस्थानों की विशेष भूमिका होती है। विश्वविद्यालय एवं शिक्षा संस्थानों के द्वारा ही विशिष्ट नवाचार से युक्त कार्यक्रमों का संचालन समय–समय पर किया जाता रहा है, जिससे विद्यार्थियों के ज्ञान व दक्षता को सर्वाधिक कर समीचीन बनाया जा सके। ऐसे ही विशिष्ट कार्यक्रम के रूप में प्रशिक्षुता (Internship) कार्यक्रम भी व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम में एक विशिष्ट उद्देश्य के साथ सम्मिलित किया गया है।

प्रशिक्षुता एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें विद्यार्थी अपने सैद्धान्तिक ज्ञान का जिसे उसने कक्षाओं में सीखा है, उसका व्यावहारिक सिथिति में उपयोग करता है। प्रशिक्षुता में वे सभी महत्वपूर्ण अनुभव सम्मिलित है जो वास्तविक कार्यक्षेत्र में करने होते हैं। यह सार्थक कौशलों का विकास करने के साथ–साथ विद्यार्थियों में संबंधित व्यवसाय के प्रति संवेदनशीलता एवं सकारात्मक अभिवृत्ति का भी विकास करता है। प्रशिक्षुता कार्यक्रम विद्यार्थियों को मूल्यवान प्रयोगात्मक अनुभव प्रदान करता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से वे अपने व्यावसायिक क्षेत्र के वास्तविक स्वरूप से जुड़ते हैं। यह कार्यक्रम उन्हें तय की गयी वृत्तिक राह के विषय में विचारशील बनाता है, साथ ही साथ व्यावसायिक कार्यक्षेत्र में कार्यरत व्यावसायिक व्यक्तियों में विद्यमान योग्यता एवं कार्य नैपुण्यता को निरीक्षण कर सीखने के अवसर भी प्रदान करता है।

समस्या का औचित्य

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम एक व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम है। जो अन्य अकादमिक शिक्षा कार्यक्रमों से बिल्कुल भिन्न है। इस कार्यक्रम के द्वारा विभिन्न स्तरों और विषय वर्ग के अध्यापकों को इस तरह से शिक्षित करने का प्रयत्न किया जाता है कि वे शैक्षिक एवं विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण करने व वहन करने में सक्षम हो सके तथा ज्ञान एवं मूल्यों का अगली पीढ़ी में हस्तानान्तरण करने में समर्थ हो सके। यदि भारतीय विभिन्न नीतिगत दस्तावेजों के झरोखे से देखा जाए तो अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता के प्रति चिन्ता एवं उसमें सुधार के सुझावों एवं सतत् प्रयासों को देखा जा सकता है। भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948.49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53), शिक्षा आयोग (1964–66), चटोपाध्याय समिति(1983–85) की रिपोर्ट में अध्यापक शिक्षा के विस्तार, गुणवत्ता सुधार, आंकलन व प्रत्ययन के संदर्भ में अनेक सुझाव दिये गये।

एन.सी.टी.ई ने वर्ष 1998 में अध्यापक शिक्षा की एक नई रूपरेखा प्रस्तुत की जिसमें शिक्षक की पहचान को मजबूती प्रदान करते हुए उसे समर्थ प्रतिबद्व और सतत सीखने में लगा हुआ वृत्तिक माना गया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में शिक्षक की भूमिका को नये तरीके से परिभाषित किया गया। शिक्षक को 'ज्ञान का दाता' न मानकर 'ज्ञान का सहनिर्माता' माना गया। इन आधारों पर एन.सी.टी.ई. द्वारा सरकारी अधिसूचना लाकर वर्ष 2014 में बी.एड. कार्यक्रम को द्विवर्षीय घोषित कर दिया गया। इस द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में न केवल अवधि बढ़ी है बल्कि नये घटकों को सम्मिलित करते हुए अध्यापक शिक्षा को प्रभावी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम भी उठाया गया। साथ ही सर्वाधिक अभिनव रूप में माध्यमिक स्तरीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत 'प्रशिक्षुता (Internship) को समाहित किया गया है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी–शिक्षकों को कार्यक्षेत्र संबंधी वास्तविक अनुभव प्रदान करने के साथ–साथ सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष को एकीकृत करने का प्रयास भी किया गया है। इस प्रशिक्षुता कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी शिक्षकों में व्यावसायिक दक्षता एवं अध्यापकीय प्रवृत्ति विकसित करना, विद्यालयी कार्यस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करना एवं उन्हें शिक्षण कौशलों से सम्पन्न बनाना है। प्रशिक्षुता काल में प्रशिक्षु सहयोगी विद्यालयों से पूर्ण रूप से सम्बद्व रहते हैं एवं वहॉ उपस्थित शिक्षकों द्वारा विभिन्न शैक्षिक क्रियाकलापों व गतिविधियों के लिए निरिक्षित व मार्गदर्शित किये जाते हैं। इसलिए प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति सहयोगी विद्यालयों के शिक्षकों के प्रत्यक्षीकरण को ज्ञात करना अनिवार्य रूप से आवश्यक हो जाता है।

समस्या कथन

''द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षुता कार्यक्रम : सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों के प्रत्यक्षीकरण''

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित है

1. सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।
2. सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण का लिंग के संदर्भ में अध्ययन करना।
3. सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण का शिक्षण अनुभव के संदर्भ में अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है –

परिकल्पना 1: सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण सकारात्मक होता है।

परिकल्पना 2: सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों के अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण में लिंग के आधार पर भिन्नता नही होती है।

परिकल्पना 3: सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों के अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण में शिक्षण अनुभव के आधार पर भिन्नता नही होती है।

शोध के चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख चर है –

1. **स्वतंत्र चर:** सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का लिंग एवं शिक्षण अनुभव।
2. **आश्रित चर:** अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण।

शोध में प्रयुक्त शब्दों का संक्रियात्मक परिभाषीकरण

1. **सहयोगी विद्यालयीन शिक्षक:** प्रशिक्षु जिन उच्च प्राथमिक/माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रशिक्षुता के अनुभव प्राप्त करते हैं उन विद्यालयों में नियमित शिक्षण करने वाल स्थायी शिक्षक, प्रस्तुत शोध में सहयोगी शिक्षक के रूप में लिये गये हैं।
2. **प्रशिक्षुता कार्यक्रम:** प्रशिक्षुता कार्यक्रम व्यावसायिक शिक्षा का एक अंतरंग घटक है यह एक ऐसा अनुभव आधारित शैक्षणिक कार्यक्रम है जिसके द्वारा विद्यार्थियों में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान के एकीकरण के साथ भावी कार्यक्षेत्र की वास्तविक स्थितियों के अनुभव प्रदान किये जाते हैं। प्रस्तुत शोध में प्रशिक्षुता कार्यक्रम से अभिप्राय माध्यमिक स्तरीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में समाहित की गयी एवं निर्धारित प्रशिक्षुता के उद्देश्य, समसत्रीय वर्ष, समयावधि, शिक्षण अभ्यास पाठों की संख्या एवं अन्य गतिविधियों में सहभागिता से है।
3. **प्रत्यक्षीकरण:** प्रत्यक्षीकरण एक संज्ञानात्मक एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण से ज्ञानेन्द्रियों द्वारा सूचना ग्रहण कर उसे अर्थ प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रशिक्षुता कार्यक्रम में सहभागी विद्यार्थी शिक्षकों के स्वगुण विकास , ज्ञान व अनुभव, व्यावसायिक भूमिकाओं एवं चुनौतियों के प्रति विद्यालयीन शिक्षकों के अर्थपूर्ण अनुभवों को प्रत्यक्षीकरण के रूप में लिया गया है।

शोध विधि

शोधकर्त्री द्वारा शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

उत्तर प्रदेश का पूर्वी क्षेत्र शिक्षा की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में ही स्थित प्रसिद्व विश्वविद्यालय हैं। इन विश्वविद्यालयों एवं इससे सम्बद्व शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षु अकादमिक सत्र (2015–17) में प्रशिक्षुता अनुभव के लिए सहयोगी विद्यालयों में भेजे गए। जिन विद्यालयों में बी.एड. के विद्यार्थी शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षुता प्राप्त की गयी उन्ही विद्यालयों में अध्यापनरत व प्रशिक्षुता सहयोगी शिक्षक प्रस्तुत शोध की जनसंख्या हैं।

न्यादर्श एवं न्यादर्श चयन

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय में एवं इससे सम्बद्व शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षुता अनुभव प्रदान करने वाले 13 सहयोगी विद्यालय (उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक) में अध्यापन करने वाले उन्हीं सहयोगी शिक्षकों का उद्देश्यपूर्ण ढ़ंग से चयन किया गया जिन्होनें प्रशिक्षुता कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थी शिक्षकों के साथ सहभागिता दी हैं। । इस प्रकार सहयोगी शिक्षकों की कुल संख्या 50 है।

प्रदत्तों के स्रोत

उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक सहयोगी विद्यालयों के शिक्षकगण।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्तों को प्राप्त करने के लिए शोधकर्त्री द्वारा प्रशिक्षुता प्रत्यक्षीकरण मापनी का निर्माण किया गया। प्रशिक्षुता के परिणामस्वरूप प्रशिक्षुओं में होने वाले परिवर्तनों एवं प्रशिक्षुओं से जुड़ी चुनौतियों को लेकर प्रशिक्षुता प्रत्यक्षीकरण मापनी का निर्माण किया गया। इस मापनी में मुख्य रूप से चार पक्षों के सन्दर्भ में प्रशिक्षुता के प्रभाव को देखा गया। जो इस प्रकार है–

प्रथम पक्ष (स्वगुण विकास) के अन्तर्गत, उत्तरदायित्व निर्वहन, नियमितता, निर्णयन क्षमता, सकारात्मक दृष्किोण, प्रशिक्षुओं के शिक्षण व्यवहार में सतत प्रगति आदि पर सहयोगी शिक्षकों की प्रतिक्रिया प्राप्त की गयी। द्वितीय पक्ष (ज्ञान व अनुभव) के अन्तर्गत प्रशिक्षुओं में अध्यापन व्यवसाय में निपुणता, वास्तविक कठिनाईयों को समझने का अवसर , पाठ नियोजन संबंधी अनुभव, आदि से संबंधित ज्ञान को देखा गया। तृतीय पक्ष (व्यावसायिक भूमिकाओं) के अन्तर्गत अध्यापन संबंधी प्रशिक्षण, शिक्षण व्यवसाय की स्पष्टता, व्यावसायिक प्रतिबद्वता, अनुसंधानात्मक दृष्टि, व्यावसायिक भूमिकाओं का निर्वहन एवं व्यावसायिक संवेदनशीलता आदि गुणों से संबंधित प्रतिक्रिया को प्राप्त करने हेतु पदों को रखा गया है। जबकि चतुर्थ पक्ष (चुनौतियों) के अन्तर्गत विद्यार्थी शिक्षकों का अवलोकन करना व विद्यालयी शिक्षकों द्वारा पृष्ठपोषण देना,प्रशिक्षुओं में पूर्व अधिगम अनुभवों की न्यूनता एवं अनुपयुक्तता, सहयोगी विद्यालयों को प्रशिक्षुता संबंधी स्पष्ट दिशा निर्देश का न होना एवं विद्यालयी प्रशिक्षण में विद्यार्थी शिक्षकों पर अत्यधिक कार्यभार का होना आदि से संबंधित पदों को रखा गया।

प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों की प्रकृति गुणात्मक एवं मात्रात्मक है।

सांख्यिकीय प्रविधियॉ

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी के अन्तर्गत आवृत्ति विश्लेषण, सारणीयन, प्रतिशत विश्लेषण, दण्ड चित्र एवं वृत्त रेखाचित्र का उपयोग किया गया है।

परिसीमाएँ

1. प्रस्तुत शोध में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय एवं इससे सम्बद्व शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों जहॉ शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये जाते है, तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध में कुशीनगर, गोरखपुर, मउ एवं आजमगढ जनपद में स्थित विद्यालयों को ही लिया गया जिसमें दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल

विश्वविद्यालय से संबंधित विद्यार्थी शिक्षकों ने प्रशिक्षुता प्राप्त की है।

3. प्रस्तुत शोध में सहयोगी विद्यालय के अन्तर्गत उन्ही विद्यालयों के स्थायी शिक्षकों को ही न्यादर्श के रूप में चयन किया गया है जहॉ प्रशिक्षुता अनुभव प्रदान किया गया है।

विश्लेषण

आकड़ों के संकलन के पश्चात उनके आधार पर निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु शोधकत्री द्धारा उन्हें इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है–

सारणी संख्या 1: सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रशिक्षुता कार्यक्रम के विभिन्न पक्षों के प्रति प्रत्यक्षीकरण

पक्षवार प्रतिकिया सहयोगी शिक्षक	No. of total	I						II						III						IV					
		सहमत		अनिश्चित		असहमत		सहमत		अनिश्चित		असहमत		सहमत		अनिश्चित		असहमत		सहमत		अनिश्चित		असहमत	
		N	%	N	%	N	%	N	%	N	%	N	%	N	%	N	%	N	%	N	%	N	%	N	%
सहयोगी वि0शिक्षक (कुशीनगर, गोरखपुर,)	25	22	88	2	8	1	4	23	92	2	8	-	-	22	88	3	12	-	-	4	16	21	84	-	-
सहयोगी वि0शिक्षक (मउ, आजमगढ,)	25	22	88	2	8	1	4	22	88	3	12	-	-	19	76	6	24	-	-	5	20	20	80	-	-

प्रस्तुत तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि I स्वगुण विकास के प्रति 88 प्रतिशत सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों (कुशीनगर, गोरखपुर, मउ एवं आजमगढ जनपद से संबंधित) ने समान रूप से सहमती में प्रतिकिया प्रदर्शित की है। जबकि असहमत में चारों जनपदों के सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रतिशत अत्यन्त कम है। अर्थात विद्यालयीन शिक्षक यह स्वीकार करते हैं कि प्रशिक्षुता द्वारा विद्यार्थी शिक्षकों में सकारात्मक दृष्किोण,उत्तरदायित्व निर्वहन, नियमितता, निर्णयन क्षमता आदि गुणों का विकास समुचित ढंग से होता है।

II ज्ञान व अनुभव के प्रति सर्वाधिक 92 प्रतिशत सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों (कुशीनगर, एवं गोरखपुर, जनपद से संबंधित) ने सहमती में प्रतिकिया प्रदर्शित की है जबकि मउ एवं आजमगढ जनपद से संबंधित 88 प्रतिशत सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों ने ही सहमती के रूप में प्रतिकिया प्रदर्शित की है। असहमत में चारों जनपदों के सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रतिशत नगण्य पाया गया। अर्थात विद्यालयीन शिक्षक यह मानते हैं कि प्रशिक्षुता कार्यक्रम प्रशिक्षुओं में अध्यापन व्यवसाय में निपुणता, वास्तविक कठिनाईयों को समझने का अवसर , पाठ नियोजन संबंधी अनुभव, आदि को विकसित करने में सहायक है।

III व्यावसायिक भूमिकाओं के प्रति 88 प्रतिशत सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों (कुशीनगर, एवं गोरखपुर, जनपद से संबंधित) ने सहमती में प्रतिकिया प्रदर्शित की है जबकि मउ एवं आजमगढ जनपद से संबंधित 76 प्रतिशत सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों ने ही सहमती के रूप में प्रतिकिया प्रदर्शित की है। असहमत में चारों जनपदों के सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रतिशत नगण्य पाया गया। अर्थात विद्यालयीन शिक्षकों का यह मानना है कि प्रशिक्षुओं में अध्यापन संबंधी प्रशिक्षण, शिक्षण व्यवसाय की स्पष्टता, व्यावसायिक प्रतिबद्वता, अनुसंधानात्मक दृष्टि, व्यावसायिक भूमिकाओं का निर्वहन एवं व्यावसायिक संवेदनशीलता आदि विकसित करने के लिए प्रशिक्षुता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

IV चुनौतियों के प्रति चारों जनपदों के सर्वाधिक सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों ने अनिश्चित रूप में प्रतिकिया प्रदर्शित की है। अर्थात यह स्पष्ट रूप से विदित होता है कि विद्यालयीन शिक्षकों ने विद्यार्थी शिक्षकों का अवलोकन करना व विद्यालयी शिक्षकों द्वारा पृष्ठपोषण देना,प्रशिक्षुओं में पूर्व अधिगम अनुभवों की न्यूनता एवं अनुपयुक्तता, सहयोगी विद्यालयों को प्रशिक्षुता संबंधी स्पष्ट दिशा निर्देश का न होना एवं विद्यालयी प्रशिक्षण में विद्यार्थी शिक्षकों पर अत्यधिक कार्यभार का होना आदि को प्रशिक्षुता कार्यक्रम में चुनौतियों के रूप में प्रत्यक्षीकृत तो किया है किन्तु कार्यक्रम के नवागत होने के कारण सर्वाधिक विद्यालयीन शिक्षक अनिश्चित पाये गयें।

सारणी संख्या 2: सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण

प्रतिकिया सहयोगी शिक्षक	No. of Total	सहमत		अनिश्चित		असहमत	
		No.	%	No.	%	No.	%
सहयोगी वि0शिक्षक (कुशीनगर, गोरखपुर,)	25	22	88	3	12	-	-
सहयोगी वि0शिक्षक (मउ, आजमगढ,)	25	20	80	5	20	-	-

प्रस्तुत तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि कुशीनगर एवं गोरखपुर, जनपद से संबंधित 88 प्रतिशत सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों ने प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति सहमती के रूप में प्रतिकिया प्रदर्शित की है 12 प्रतिशत अनिश्चित है एवं असहमत में सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रतिशत नगण्य है।

जबकि मउ एवं आजमगढ जनपद से संबंधित सर्वाधिक 80 प्रतिशत सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों की प्रतिकिया सहमती के रूप में है, 20 प्रतिशत अनिश्चित है एवं असहमत में सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रतिशत नगण्य है।

अतः कहा जा सकता है कि चारों जनपदों से संबंधित सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों की प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रतिकिया सकारात्मक रूप में पायी गयी।

सारणी संख्या 3: लिंगवार सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण

प्रतिकिया लिंग	No. of Total	सहमत		अनिश्चित		असहमत	
		No.	%	No.	%	No.	%
पुरूष	17	15	88	2	12	-	-
महिला	33	27	82	6	18	-	-

प्रस्तुत तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि 88 प्रतिशत पुरूष सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों ने प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति सहमती के रूप में प्रतिकिया प्रदर्शित की है 12 प्रतिशत अनिश्चित है एवं असहमत में पुरूष सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रतिशत नगण्य है।

जबकि 82 प्रतिशत महिला सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों की प्रतिकिया सहमती के रूप में पायी गयी है, 18 प्रतिशत अनिश्चित है एवं असहमत में महिला सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रतिशत नगण्य है।

अतः कहा जा सकता है कि लिंग के आधार पर सर्वाधिक सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकें का प्रत्यक्षीकरण सहमती के रूप में है जबकि असहमत के रूप में सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकें का प्रतिशत शून्य है। अर्थात लिंग के आधार पर सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रतिशत समान है।

सारणी संख्या 4: शैक्षिक अनुभव के आधार सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण

प्रतिक्रिया शैक्षिक अनुभव	No. of Total	सहमत		अनिश्चित		असहमत	
		No.	%	No.	%	No.	%
1–10 वर्ष	23	21	91	2	9	-	-
10 वर्ष से अधिक	27	21	78	6	2	-	-

प्रस्तुत तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि 1– 10 वर्ष का शैक्षिक अनुभव वाले 91 प्रतिशत सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों ने प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति सहमती के रूप में प्रतिक्रिया प्रदर्शित की है 9 प्रतिशत अनिश्चित है एवं असहमत में किसी भी सहयोगी विद्यालयीन शिक्षक की प्रतिक्रिया नही पायी गयी है।
जबकि 10 वर्ष से अधिक का शैक्षिक अनुभव वाले 78 प्रतिशत सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों की प्रतिक्रिया सहमती के रूप में पायी गयी है, 2 प्रतिशत अनिश्चित है एवं असहमत में किसी भी सहयोगी विद्यालयीन शिक्षक की प्रतिक्रिया नही पायी गयी है।
अतः कहा जा सकता है कि शैक्षिक अनुभव के आधार पर सर्वाधिक सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकें का प्रत्यक्षीकरण सहमती के रूप में पाया गया। अर्थात शैक्षिक अनुभव के आधार पर सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों की प्रतिक्रिया भिन्नतापरक नही है।

निष्कर्ष

1. प्रशिक्षुता कार्यक्रम के विभिन्न पक्षों में स्वगुण विकास के प्रति प्रत्यक्षीकरण के अन्तर्गत विद्यालयीन शिक्षक यह स्वीकार करते हैं कि प्रशिक्षुता द्वारा विद्यार्थी शिक्षकों में सकारात्मक दृष्किोण,उत्तरदायित्व निर्वहन, नियमितता, निर्णयन क्षमता आदि गुणों का विकास समुचित ढंग से होता है।
2. ज्ञान व अनुभव के अन्तर्गत सर्वाधिक विद्यालयीन शिक्षक यह यह मानते हैं कि प्रशिक्षुता कार्यक्रम प्रशिक्षुओं में अध्यापन व्यवसाय में निपुणता, वास्तविक कठिनाईयों को समझने का अवसर , पाठ नियोजन संबंधी अनुभव, आदि को विकसित करने में सहायक है।
3. व्यावसायिक भूमिकाओं के अन्तर्गत प्रशिक्षुओं में अध्यापन संबंधी प्रशिक्षण, शिक्षण व्यवसाय की स्पष्टता, व्यावसायिक प्रतिबद्वता, अनुसंधानात्मक दृष्टि, व्यावसायिक भूमिकाओं का निर्वहन एवं व्यावसायिक संवेदनशीलता आदि विकसित करने के लिए प्रशिक्षुता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
4. चुनौतियों के प्रति प्रत्यक्षीकरण के अन्तर्गत यह स्पष्ट रूप से विदित होता है कि विद्यालयीन शिक्षकों ने विद्यार्थी शिक्षकों का अवलोकन करना व विद्यालयी शिक्षकों द्वारा पृष्ठपोषण देना,प्रशिक्षुओं में पूर्व अधिगम अनुभवों की न्यूनता एवं अनुपयुक्तता, सहयोगी विद्यालयों को प्रशिक्षुता संबंधी स्पष्ट दिशा निर्देश का न होना एवं विद्यालयी प्रशिक्षण में विद्यार्थी शिक्षकों पर अत्यधिक कार्यभार का होना आदि को प्रशिक्षुता कार्यक्रम में चुनौनियों के रूप में प्रत्यक्षीकृत तो किया है किन्तु कार्यक्रम के नवागत होने के कारण विद्यालयीन शिक्षक अनिश्चित भी पाये गयें।
5. सभी चार जनपदों (कुशीनगर, गोरखपुर, मउ एवं आजमगढ) से संबंधित सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों की प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रतिक्रिया सकारात्मक रूप में पायी गयी।
6. पुरूष एवं महिला सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण समान है अर्थात पुरूष सहयोगी विद्यालयीन शिक्षक के समान महिला सहयोगी विद्यालयीन शिक्षक भी प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया रखते हैं।
7. 10 वर्ष एवं 10 वर्ष से अधिक का शिक्षण अनुभव रखने वाले सर्वाधिक सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रत्यक्षीकरण सहमती के रूप में प्राप्त हुआ अर्थात शिक्षण अनुभव के आधार पर सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों के प्रत्यक्षीकरण में कोई भिन्नता नही पायी गयी। इसका अभिप्राय यह है कि दोनो तरह के शिक्षण अनुभव वाले सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों का प्रशिक्षुता कार्यक्रम के प्रति प्रत्यक्षीकरण समान है।

शैक्षिक निहितार्थ

कोई भी शोध तभी सार्थक है जब उसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष समाजोपयोगी हो। इस शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम अध्यापक शिक्षा व विद्यालयी शिक्षा जगत की विभिन्न समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं–

1. प्रशिक्षुता कार्यक्रम को अध्यापक शिक्षा में एक महत्वपूर्ण घटक के रूप प्रत्यक्षीकृत किया गया है परन्तु फिर भी द्विवर्षीय बी. एड. को लेकर लोगों में नकारात्मकता है। इस दृष्टिकोण को दूर करने के लिए एन. सी. टी. ई. कुछ विशेष एवं महत्वपूर्ण कदम उठाये जैसे– जागरूकता अभियान, सेमीनार आदि।
2. प्रस्तुत शोध में सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षुता कार्यक्रम के सभी पक्षों जैसे– स्वगुण विकास , ज्ञान व अनुभव, व्यावसायिक भूमिकाओं एवं चुनौतियों से संबंधित दी गयी प्रतिक्रियाओं से प्राप्त निष्कर्ष अध्यापक शिक्षा के लिए लाभदायक है।
3. सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों के सन्दर्भ में भी NCTE प्रशिक्षुता सहभागिता व मूल्यांकन के लिए एक रूपरेखा निर्धरित करे जिससे संबंधित दस्तावेज को विद्यालयीन शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षुता कार्यक्रम के समाप्त होने के बाद अध्यापक शिक्षा संस्थानों को भेजा जाय।
4. प्रशिक्षुता से पूर्व अध्यापक शिक्षा संस्थानों में एक संगोष्ठी का आयोजन किया जाय जिसमें प्रशिक्षुता सहयोगी विद्यालय के प्रधानाध्यापकों व वरिष्ठ शिक्षकों को भी बुलाया जाय। यह कार्यक्रम प्रशिक्षुता कार्यक्रम संचालन के समय दोनों के बीच सामंजस्य बनाने में सहायक होगा जिसमें दोनों ही पक्ष अपनी अपेक्षाओं व कठिनाईयों को साझा कर सके एवं प्रशिक्षुता को प्रभावी बनानें के उपायों पर निर्णयन कर सके।
5. प्रस्तुत शोध में सर्वाधिक सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों की प्रशिक्षुता कार्यक्रम से संबंधित चुनौतियों के प्रति अनिश्चितता पायी गयी है। इन परिणामों के आधार पर उन चुनौतियों को समझकर उनका समाधान प्राप्त करने में सहायता मिल सकेगी।
6. प्रशिक्षुता कार्यक्रम के संचालन में सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों की भूमिका स्पष्ट हो इसके लिए NCTE सभी स्टेट बोर्ड एवं सेन्ट्रल बोर्ड को विद्यालयी प्रशिक्षुता से संबंधित क्रियाकलापों एवं सहयोगी शिक्षकों की भूमिकाओं से संबंधित कुछ निश्चित बिन्दुओं को निर्धारित कर भेजे जिससे इन निर्देशों की सूची विद्यालयों को उपलब्ध करा प्रशिक्षुता कार्यक्रम को और अधिक समीचीन एवं समुन्नत बनाया जा सके। कुछ राज्यों में NCTE ने इस कड़ी के अर्न्तगत कुछ सार्थक कदम उठाना शुरू भी कर दिया है परन्तु अभी भी इन प्रयासों को और अधिक समृद्व बनाने की आवश्यकता है।

7. प्रशिक्षुता कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षुओं को कुछ वृत्तिक सहायता भी प्रदान किया जाय और साथ ही अध्यापक शिक्षकों एवं सहयोगी विद्यालयीन शिक्षकों को भी कुछ प्रेरक प्रदान करने का प्रावधान हो।

सन्दर्भ

1. ऋषभ, कुमार मिश्र (2014), शिक्षक शिक्षा में बदलाव की पहल, चुनौतियॉ एवं संभावनाऍ, परिप्रेक्ष्य,वल्यूम 21 अंक 2पृष्ठ सं–39–51।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति .(1986),भारत सरकार , नई दिल्ली।
3. भारत सरकार.(1964–66), शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन : शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया.(1988), नेशनल करीकुलम ऑफ टीचर एजुकेशनः नेशनल काउन्सिल ऑफ टीचर एजुकेशन, न्यू देहली।
5. पुनर्संशोधित कार्य योजना .(1992), भारत सरकार , नई दिल्ली।
6. अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या प्रारूप.(1996), राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली।
7. करीकुलम फ्रेमवर्क फॉर क्वालिटी एजुकेशन.(1998),परिचर्चा दस्तावेज, नेशनल करीकुलम ऑफ टीचर एजुकेशन, न्यू देहली
8. गुणात्मक अध्यापक शिक्षा का पाठ्यचर्या प्रारूप.(1999), राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली।
9. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005), एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
10. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या प्रारूप (2009), राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, नई दिल्ली।
11. परवीन, सलेहा,मिर्जा नाएद (2012) ,इण्टर्नषिप प्रोग्राम इन एजुकेंषन,इफेक्टिवनेस ,प्राब्लम्स एण्ड प्रासपेक्ट्स, रिट्राइव्ड अगस्त 9, 2015।
12. swww.macrothink.org/journal/index.php/ijld/article/download/./1186